MAKTABATUL MADINA INDIA

हफ़्तावार रिसाला : 435
Weekly Booklet : 435

Faizan e Ayyam (Hindi)

अल मदीनतुल इल्मिय्या की किताब "इस्लामी महीनों के फ़ज़ाइल" से तय्यार किया गया रिसाला

बनाम

फ़ैज़ाने अय्याम

(सफ़्हात : 24)

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖن ط
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡم ط بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم ط

फ़ैज़ाने अय्याम[1]

दुआए अत्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 24 सफ़हात का रिसाला "फ़ैज़ाने अय्याम" पढ़ या सुन ले उसे बरकत वाले दिनों के सदक़े अपने प्यारों में शामिल फ़रमा और उस को मां बाप समेत जन्नतुल फ़िरदौस में बे हिसाब दाख़िला नसीब फ़रमा। اٰمِین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह पाक उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े अल्लाह पाक उस पर सौ रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर सौ मरतबा दुरूदे पाक पढ़े अल्लाह पाक उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत शुहदा के साथ रखेगा। (معجم اوسط، 5/252، حدیث: 7235)

या नबी ! तुझ पे लाखों दुरूदो सलाम
इस पे है नाज़ मुझ को हूं तेरा ग़ुलाम
अपनी रह़मत से तू शाहे ख़ैरुल अनाम
मुझ से आसी का भी नाज़ बरदार है

(वसाइले बख़्शिश, स. 481)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

जुम्अ़तुल मुबारक

जुम्अ़तुल मुबारक अ़ज़मत, बरकत और सवाब के एतिबार से इम्तियाज़ी

[1]... येह मज़्मून मक्तबतुल मदीना की किताब "इस्लामी महीनों के फ़ज़ाइल" सफ़हा 293 ता 320 से लिया गया है।

मक़ाम रखता है, क़ुरआने करीम में इसी नाम की एक मुकम्मल सूरत है जिस में नमाज़े जुमुअ़ा का तज़्किरा भी है। चूंकि इस दिन में तमाम मख़्लूक़ात वुजूद में मुज्तमअ़ (यानी इकट्ठी) हुई कि तक्मीले ख़ल्क़ इसी दिन हुई नीज़ ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام की मिट्टी इसी दिन जमा हुई नीज़ इस दिन में लोग नमाज़े जुमुअ़ा जमा हो कर अदा करते हैं, इन वुजूह से इसे जुमुअ़ा कहते हैं। इस्लाम से पहले अहले अ़रब इसे "अ़रूबा" कहते थे। (मिरआतुल मनाजीह़, 2/317)

इस मुबारक दिन को कई तारीख़ी निस्बतें और बहुत सी ख़ुसूसिय्यात ह़ासिल हैं, मसलन ❀ अल्लाह पाक ने जुमुअ़ा को ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام को पैदा फ़रमाया, इसी दिन उन्हें ज़मीन पर उतारा और इसी दिन उन्हें वफ़ात दी ❀ जुमुअ़ा की एक साअ़त ऐसी है कि बन्दा उस वक़्त जिस चीज़ का सुवाल करेगा अल्लाह पाक उसे अ़त़ा फ़रमाएगा जब तक ह़राम का सुवाल न करे। ❀ इसी दिन में क़ियामत क़ाइम होगी। कोई मुक़र्रब फ़रिश्ता, आस्मान व ज़मीन, हवा, पहाड़ और दरिया ऐसा नहीं कि जुमुअ़ा के दिन से डरता न हो। (ابن ماجہ، 2/8،حدیث:1084ملتقطاً)

❀ इन मुक़द्दस हस्तियों का निकाह़ जुमुअ़ा के दिन हुवा : ﴾1﴿ ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام का ह़ज़रते ह़व्वा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا से ﴾2﴿ ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام का ह़ज़रते ज़ुलैख़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا से ﴾3﴿ ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام का ह़ज़रते सफ़ूरा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا से ﴾4﴿ ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام का ह़ज़रते बिल्क़ीस رَضِیَ اللہُ عَنْہَا से ﴾5﴿ ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते बीबी ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا और उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا से ﴾6﴿ मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہُ का जिगर गोशए रसूल, ख़ातूने जन्नत, ह़ज़रते बीबी फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا से। (کتاب السبعیات فی مواعظ البریات، ص96- فضائل الایام والشہور، ص185) ❀ इसी मुबारक दिन को मुसलमानों की ई़द क़रार दिया गया। (سنن کبریٰ للبیہقی، 1/447،حدیث:1427ماخوذاً)

❀ जुमुआ को सय्यिदुल अय्याम (यानी दिनों का सरदार) फ़रमाया गया है। (مستدرک،1/567،حدیث:1065ماخوذاً) ❀ जुम्अ़तुल मुबारक को नेकियों का सवाब बढ़ा दिया जाता है। (معجم اوسط،6/33،حدیث:7895) इस दिन जहन्नम के दरवाज़े नहीं खोले जाते, न ही उसे भड़काया जाता है। ❀ अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام और मां बाप के सामने हर जुमुआ को आमाल नामे पेश होते हैं। (نوادر الاصول،4/213،حدیث:924ملتقطاً)
❀ इसी दिन मुसलमान नमाज़े जुमुआ अदा करते हैं।

जुम्अ़तुल मुबारक का दिन कैसे गुज़ारें ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जुमुआ की शानो अ़ज़मत के बारे में आप जान ही चुके हैं, इस बा बरकत दिन की मुबारक घड़ियों को गुज़ारने के लिये भी हमारी भरपूर रहनुमाई की गई है, आइये ! पढ़िये :

जुमुआ का रोज़ा

जुमुआ का रोज़ा जन्नत को वाजिब करने वाले आमाल में से एक है, चुनान्चे नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जिस ने जुमुआ की नमाज़ पढ़ी, उस दिन का रोज़ा रखा, किसी मरीज़ की इ़यादत की, किसी जनाज़े में ह़ाज़िर हुवा और किसी निकाह़ में शिर्कत की तो जन्नत उस के लिये वाजिब हो गई।
(معجم کبیر،8/97،حدیث:7484)

सिर्फ़ जुमुआ का रोज़ा रखना कैसा ?

ख़ुसूसिय्यत के साथ तन्हा जुमुआ या सिर्फ़ हफ़्ते का रोज़ा रखना मकरूहे तन्ज़ीही है। हां अगर किसी मख़्सूस तारीख़ को जुमुआ या हफ़्ता आ गया तो कराहत नहीं। मसलन 15 शाबान शरीफ़, 27 रजब शरीफ़ वग़ैरा जुमुआ को आ गई और अब उन तारीख़ों की वज्ह से अ़लाह़दा जुमुआ का रोज़ा रखा तो ह़रज नहीं। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जुमुआ का दिन तुम्हारे लिये ई़द है इस दिन

रोज़ा मत रखो मगर येह कि इस से पहले या बाद में भी रोज़ा रखो।

(الترغیب والترہیب،2/81،حدیث:11)

दस हज़ार बरस के रोज़ों का सवाब

आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : रोज़ए जुमुआ यानी जब उस के साथ पंज शम्बा (जुमेरात) या शम्बा (हफ़्ते का रोज़ा) भी शामिल हो, मरवी हुवा कि दस हज़ार बरस के रोज़ों के बराबर है।

(फ़तावा रज़विय्या, 10/653)

जुमुअ़ा के दिन के आमाल

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! शबे जुमुअ़ा और रोज़े जुमुअ़ा के आमाल ज़िक्र किये जा रहे हैं, इन का भी मुत़ालअ़ा फ़रमाइये :

﴾1﴿ शबे जुमुअ़ा के 4 आमाल

❀ शबे जुमुअ़ा मग़रिब की नमाज़ के बाद इस ह़दीस में बयान किये गए त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ दो रकअ़त नमाज़ अदा करने वाला मौत की तक्लीफ़ और अ़ज़ाबे क़ब्र से मह़फ़ूज़ रहेगा, चुनान्चे फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो कोई जुमुअ़ा की रात बाद नमाज़े मग़रिब दो रकअ़त यूं अदा करे कि हर रकअ़त में एक मरतबा सूरए फ़ातिह़ा, 15 मरतबा सूरए ज़िलज़ाल पढ़े तो अल्लाह पाक उस पर सकराते मौत आसान फ़रमा देगा, उसे अ़ज़ाबे क़ब्र से मह़फ़ूज़ रखेगा और बरोज़े क़ियामत पुल सिरात़ से गुज़रना उस के लिये आसान कर देगा।

(اللمعۃ فی خصائص الجمعۃ، ص113)

❀ सूरए यासीन पढ़िए और मग़्फ़िरत के ह़क़दार क़रार पाइये, फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो शबे जुमुअ़ा (यानी जुमेरात) और जुमुअ़ा की दरमियानी शब) सूरए यासीन पढ़े उस की मग़्फ़िरत हो जाएगी। (الترغیب والترہیب،1/298،حدیث:4)

❀ फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मोमिन जुमुआ की रात दो रकअ़त इस त़रह़ पढ़े कि हर रकअ़त में सूरए फ़ातिह़ा के बाद 25 मरतबा सूरए इख़्लास पढ़े फिर येह दुरूदे पाक "صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ" हज़ार मरतबा पढ़े तो आने वाले जुमुआ से पहले ख़्वाब में मेरी ज़ियारत करेगा और जिस ने मेरी ज़ियारत की अल्लाह पाक उस के गुनाह मुआफ़ फ़रमा देगा। (القول البدیع، ص383)

❀ इमाम ज़ोहरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जो शबे जुमुआ ग़ुस्ल कर के दो रकअ़त यूं अदा करे कि उन में हज़ार मरतबा सूरए इख़्लास पढ़े तो उसे ख़्वाब में नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत होगी। (تاریخ ابنِ عساکر، 9/301، رقم:816)

﴾2﴿ जुमुआ के दिन के 5 आमाल

❀ नाख़ुन तराश लीजिये, ऐसा करना शिफ़ा ह़ासिल करने का सबब है, चुनान्चे ह़दीसे पाक में है : जो शख़्स जुमुआ के दिन नाख़ुन काटता है अल्लाह पाक उस से बीमारी निकाल कर शिफ़ा देता है। (مصنف عبد الرزاق، 3/93، حدیث:5325) याद रखिये ! जुमुआ के दिन नाख़ुन तरशवाना मुस्तह़ब है, हां ! अगर ज़ियादा बढ़ गए हों तो जुमुआ का इन्तिज़ार न करे क्यूंकि नाख़ुनों का बड़ा होना तंगिए रिज़्क़ का सबब है। (बहारे शरीअ़त, 1/582, ह़िस्सा 4)

❀ जुमुआ के दिन ग़ुस्ल कीजिये और ख़ुश्बू लगाइये कि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स जुमुआ के दिन ग़ुस्ल करे और बक़द्रे ताक़त सफ़ाई करे फिर तेल और घर में मौजूद ख़ुश्बू लगाए फिर नमाज़ को निकले और दो अफ़राद में जुदाई न डाले (इस त़रह़ कि न तो लोगों की गर्दनें फलांगे और न साथियों को चीर कर उन के दरमियान बैठे बल्कि जहां जगह मिले वहां बैठ जाए) और जो नमाज़ उस के लिये लिखी गई है पढ़े और जब इमाम ख़ुत़्बा पढ़े तो ख़ामोश रहे तो उस के इस जुमुआ और अगले जुमुआ के दरमियान के गुनाह बख़्श दिये जाएंगे। (بخاری، 1/306، حدیث:883)

❀ जुमुआ के दिन अच्छा लिबास पहनिये कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने जुमुआ के दिन ग़ुस्ल किया और अच्छे कपड़े पहने फिर अगर उस के पास ख़ुश्बू थी तो उसे लगाया, फिर जुमुआ के लिये सुकूनो वक़ार के साथ चला और किसी की गर्दन न फलांगी और न किसी को तक्लीफ़ पहुंचाई फिर नमाज़ अदा की और इमाम के लौटने तक इन्तिज़ार किया तो उस के दो जुमुओ के दरमियान के गुनाह बख़्श दिये जाएंगे।

(مجمع الزوائد، 2/385، حدیث:3039۔ معجم کبیر، 4/160، حدیث:4006)

❀ शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहल्वी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ नक़्ल करते हैं : जो शख़्स जुमुआ के दिन एक हज़ार बार येह दुरूद शरीफ़ "اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدِنِ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم" पढ़े तो नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़्वाब में ज़ियारत करेगा या जन्नत में अपनी मन्ज़िल देख लेगा। अगर पहली बार मक़्सद पूरा न हो तो दूसरे जुमुआ भी पढ़ ले, اِنْ شَآءَ اللّٰہ पांच जुमुओं तक ख़ुश करने वाला ख़्वाब देखेगा।

(جذب القلوب، ص242 ماخوذاً)

❀ अगर वालिदैन दुनिया से रुख़्सत हो चुके हैं तो उन की क़ब्र की ज़ियारत कीजिये कि (मां बाप की क़ब्र की) ज़ियारत का अफ़्ज़ल वक़्त रोज़े जुमुआ बाद नमाज़े सुब्ह है। (फ़तावा रज़विय्या, 9/523)

﴾3﴿ नमाज़े जुमुआ बा इमामा अदा कीजिये

जुमुअतुल मुबारक के दिन इमामा शरीफ़ बांधना सुन्नते मुबारका है और इस की बरकत से अल्लाह पाक अज्रो सवाब में भी कई गुना इज़ाफ़ा फ़रमा देता है, फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : इमामे के साथ एक जुमुआ बग़ैर इमामे के साथ सत्तर जुमुओं के बराबर है।

(جامع صغیر، ص314، حدیث:5101 مختصراً۔ تاریخ ابن عساکر، 37/355، رقم:4399)

रोज़े जुमुआ इमामा शरीफ़ बांध कर नमाज़े जुमुआ पढ़ने वालों पर अल्लाह पाक और उस के फ़रिश्ते दुरूद भेजते हैं, चुनान्चे अल्लाह के नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बेशक अल्लाह पाक और उस के फ़रिश्ते जुमुआ के रोज़ इमामा बांधने वालों पर दुरूद भेजते हैं।

(مجمع الزوائد،2/394،حدیث:3075۔ کنز العمال،جز7،4/302،حدیث:21162)

हज़रते अ़ल्लामा इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : अल्लाह पाक के दुरूद भेजने का मतलब रह़मत नाज़िल फ़रमाना और फ़रिश्तों के दुरूद भेजने का मतलब इस्तिग़फ़ार करना है। (فتح الباری لابن حجر،12/131،تحت الحدیث:6358)

﴾4﴿ नमाज़े जुमुआ के बाद येह दुआ पढ़िये

शारेहे बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा अह़मद बिन मुह़म्मद क़स्त़लानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه (वफ़ात :923 हि.), ह़ज़रते इमाम अ़ब्दुल्लाह याफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه (वफ़ात ; 768 हि.) से लिखते हैं कि नमाज़े जुमुआ के बाद येह दुआ मांगनी चाहिये

اَللّٰهُمَّ يَاذَا الْمَنِّ وَلَا يُمَنُّ عَلَيْكَ، يَاذَا الْجَلَالِ وَ الْاِكْرَامِ، يَاذَا الطَّوْلِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ ظَهْرُ اللَّاجِيْنَ وَجَارُ الْمُسْتَجِيْرِيْنَ وَمَاْمَنُ الْخَائِفِيْنَ اِنْ كُنْتَ كَتَبْتَنِيْ شَقِيًّا اَوْ مَحْرُوْمًا اَوْ مُقَتَّرًا عَلَيَّ فِي الرِّزْقِ فَامْحُ شَقَاوَتِيْ وَحِرْمَانِيْ وَ اِقْتَارَ رِزْقِيْ وَاَثْبِتْنِيْ عِنْدَكَ سَعِيْدًا مَّرْزُوْقًا مُّوَفَّقًا لِّلْخَيْرَاتِ، فَاِنَّكَ قُلْتَ فِيْ كِتَابِكَ الْعَزِيْزِ الْمُنَزَّلِ عَلٰى نَبِيِّكَ الْمُرْسَلِ ﴿يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَيُثْبِتُ ۚ وَعِنْدَهٗۤ اُمُّ الْكِتٰبِ ﴿۳۹﴾﴾ (پ13،الرعد:39)

(الارشاد والتطریز، ص44-لوامع الانوار فی الادعیۃ والاذکار، ص261 بالفاظ متقاربۃ)

﴾5﴿ यौमे जुमुआ के दीगर आमाल

❀ ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स जुमुआ के दिन मुझ पर 80 बार दुरूदे पाक पढ़ेगा अल्लाह पाक उस के 80 साल के गुनाह

मुआफ़ फ़रमा देगा। अर्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप पर दुरूद कैसे भेजें ? इरशाद फ़रमाया : यूं कहो : اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَنَبِيِّكَ وَرَسُوْلِكَ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ यानी ऐ अल्लाह पाक ! अपने बन्दए ख़ास, अपने नबी और अपने रसूल नबिय्ये उम्मी हज़रते मुहम्मद صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर रहमत नाज़िल फ़रमा।(احیاء العلوم، 1/251 ملخصًا)

❀ सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : रौशन रात और चमकते दिन यानी जुमुआ की रात और जुमुआ के दिन में मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो। (معجم اوسط، 1/84، حدیث:241)

❀ सूरए कहफ़ की तिलावत कीजिये कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो जुमुआ के दिन सूरए कहफ़ पढ़े उस के और बैते अतीक़ (ख़ानए काबा) के दरमियान एक नूर रौशन कर दिया जाता है। (شعب الایمان، 2/474، حدیث:2444)

❀ फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : जुमुआ के दिन मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो क्यूंकि येह यौमे मश्हूद (हाज़िरी का दिन) है, उस दिन फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं और जो मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है उस के दुरूदे पाक से फ़ारिग़ होने से पहले उस का दुरूदे पाक मुझ तक पहुंच जाता है। (ابن ماجہ، 2/291، حدیث:1637)

❀ नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो जुमुआ के दिन जामेअ़ मस्जिद में दाख़िल हो और जुमुआ की नमाज़ से पहले चार रकअ़त नमाज़ पढ़े, हर रकअ़त में اَلْحَمْدُ لِلّٰہ (सूरए फ़ातिहा) और 50 बार قُلْ ھُوَاللہُ اَحَد (पूरी सूरत) पढ़े वोह मरने से पहले जन्नत में अपना ठिकाना देख लेगा या उस का ठिकाना दिखा दिया जाएगा। (احیاء العلوم، 1/267)

❀ अगर कोई सख़्त मुश्किल या हाजत पेश आ जाए तो बुध, जुमेरात और जुमुआ को मुसल्सल तीन दिन रोज़े रखे और जुमुआ का ग़ुस्ल कर के नमाज़े जुमुआ के लिये जाए और कुछ ख़ैरात भी करे फिर नमाज़े जुमुआ के बाद येह दुआ पढ़ कर अपने मक़्सद के लिये दिल लगाकर और गिड़गिड़ा कर ख़ुदा से दुआ मांगे اِنْ شَآءَ اللہ ज़रूर उस की दुआ क़बूल होगी।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُكَ بِاِسْمِكَ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ اَلَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ط عَالِمُ الْغَيْبِ
وَالشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ وَاَسْئَلُكَ بِاِسْمِكَ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط اَلَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا
هُوَ ط اَلْحَیُّ الْقَيُّوْمُ ط لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ط اَلَّذِیْ مَلَئَتْ عَظَمَتُهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ط وَاَسْئَلُكَ
بِاِسْمِكَ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط اَلَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ وَعَنَتْ لَهُ الْوُجُوْهُ وَخَشَعَتْ لَهُ الْاَصْوَاتُ
وَوَجِلَتِ الْقُلُوْبُ مِنْ خَشْيَتِهٖ اَنْ تُصَلِّیَ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ صَلَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
وَاَنْ تُعْطِيَنِیْ مَسْئَلَتِیْ وَتَقْضِیَ حَاجَتِیْ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ۔

लफ़्ज़ हाजती के बाद अपनी ज़रूरत का नाम ज़िक्र कीजिये।

(जन्नती ज़ेवर, स. 578 बतग़य्युर)

हफ़्ता

हफ़्ते का दिन भी बहुत बा बरकत और बा अ़ज़मत है। हफ़्ते के दिन को तारीख़ी एतिबार से कई निस्बतें हासिल हैं : ❀ नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जंगे बद्र के लिये तीन सौ पांच मुहाजिरीन व अन्सार सहाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم के साथ हफ़्ते वाले दिन मदीनए मुनव्वरा से रवाना हुए। (फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आज़म, 1/474 मुलख़्ख़सन) आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर हफ़्ते के दिन कभी सुवार तो कभी पैदल क़ुबा तशरीफ़ ले जाते।(مسلم، ص555، حدیث:3396) ❀ अल्लाह पाक ने हफ़्ते के दिन ज़मीन की अस्ल को पैदा फ़रमाया। (مسلم، ص1149، حدیث:7054) ❀ अल्लाह पाक ने हफ़्ते के दिन ह़ज़रते दाऊद عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम के सत्तर हज़ार अफ़राद पर मछली के शिकार को हराम फ़रमा दिया था। (अजाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन, स. 34 माख़ूज़न)
❀ क़ुरआने पाक में यौमे सब्त यानी हफ़्ते का ज़िक्र सात मक़ामात पर आया है।

(فضائل الایام والشہور، ص240)

हफ़्ते का दिन कैसे गुज़ारें ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! दीने इस्लाम ने जिस त़रह़ हर दिन को नेकियों में बसर करने के लिये हमारी रहनुमाई फ़रमाई है इसी त़रह़ हफ़्ते के दिन को भी नेकियों में गुज़ारने के लिये चन्द आमाल बताए हैं जिन पर अ़मल की बरकत से हमारा येह दिन भी ख़ैरो बरकत वाला बन सकता है।

हफ़्ते के दिन का रोज़ा

उस दिन के मामूलात में से है कि उस दिन रोज़ा रखा जाए चुनान्चे ह़ज़रते बीबी उम्मे सलमा رَضِیَ اللہُ عَنۡہَا से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हफ़्ता और इतवार का रोज़ा अक्सर रखा करते और फ़रमाते : येह दोनों (हफ़्ता और इतवार) मुश्रिकीन की ई़द के दिन हैं और मैं चाहता हूं कि उन की मुख़ालफ़त करूं।

(صحیح ابنِ خزیمہ، 3/318، حدیث:2167)

हफ़्ते के दिन रोज़ा रखने की तरग़ीब के साथ साथ उस दिन रोज़ा रखने की मुमानअ़त भी आई है चुनान्चे, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन बुसर رَضِیَ اللہُ عَنۡہُ अपनी बहन से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : हफ़्ते के दिन का रोज़ा फ़र्ज़ रोज़ों के इ़लावा मत रखो। (ترمذی، 2/186، حدیث:744 ملخصًا)

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہ इस की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : नफ़्ली रोज़ा सिर्फ़ हफ़्ते के दिन ना रखो क्यूंकि उस में यहूद से मुशाहबत है कि वोह अगर्चे उस दिन रोज़ा तो नहीं रखते मगर उस की ताज़ीम बहुत ही करते हैं, तुम्हारे इस रोज़े में उन से इश्तिबाह होगा। जम्हूर उ़लमाए किराम رَحۡمَۃُ اللہِ عَلَیۡہِم का क़ौल येह है कि येह मुमानअ़त भी तन्ज़ीही है। अगर हफ़्ते के साथ (किसी) और दिन (मसलन इतवार या जुमुआ़) का भी रोज़ा रख लिया जाए तो न मुशाबहत रहेगी न मुमानअ़त। (मिरआतुल मनाजीह़, 3/192 ब तग़य्युर)

हफ़्ते के दिन के आमाल

﴾1﴿ हफ़्ते की बा बरकत सुब्ह

मल्फ़ूज़ाते आला ह़ज़रत में है : अ़र्ज़ : ह़ुज़ूर एक इस्तिग़ासा पेश करना है (यानी कोर्ट में दरख़्वास्त दाइर करनी है), उस के वासिते़ कौन सा दिन मुनासिब है ? इरशाद : उस के लिये कोई ख़ास दिन मुक़र्रर नहीं अलबत्ता ह़दीस शरीफ़ में इरशाद है कि जो शख़्स किसी ह़ाजत को हफ़्ते के दिन सुब्ह़ के वक़्त क़ब्ले त़ुलूए आफ़्ताब अपने घर से निकले तो उस की ह़ाजत रवाई (यानी ह़ाजत पूरी होने) का मैं ज़ामिन (यानी ज़िम्मेदार) हूं। (مسند الفردوس،3/519،حدیث:5620, मल्फ़ूज़ाते आला ह़ज़रत, स. 116)

﴾2﴿ सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म का त़रीक़ा

मुसलमानों के दूसरे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ हर हफ़्ते के दिन मदीना शरीफ़ के बालाई ह़िस्से में तशरीफ़ ले जाते, अगर आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ वहां किसी ग़ुलाम को ऐसा काम करता देखते जिस की उसे त़ाक़त न होती तो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ उस का हाथ बटाते। (احیاء العلوم،2/275)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमें भी उस दिन ग़रीबों और कमज़ोर लोगों की मदद करनी चाहिये कि इस त़रह़ दूसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के त़रीक़े पर भी अ़मल हो जाएगा।

इतवार

इतवार अ़ज़मतो बरकत वाला दिन है, इतवार को कई तारीख़ी निस्बतें और ख़ुसूसिय्यात ह़ासिल हैं मसलन ❀ अल्लाह पाक ने इतवार के रोज़ तीन क़िस्म के तारे बनाए ❀ येह सात समुन्दर भी इसी दिन बनाए : ﴾1﴿ त़ब्रिस्तान ﴾2﴿ बह़रे करमान ﴾3﴿ बह़रे क़ुल्ज़ुम ﴾4﴿ बह़रे हिन्द ﴾5﴿ बह़रे उ़मान ﴾6﴿ बह़रे रूम ﴾7﴿ बह़रे मग़रिब ❀ इसी दिन अल्लाह पाक ने आग, सात ज़मीनें, इन्सान के साथ उस के

आज़ाए सुजूद यानी दोनों हाथ पांव, घुटने और चेहरा तख़्लीक़ किया और सातों दिन पैदा किये। (کتاب السبعیات فی مواعظ البریات، ص26-36 ملتقطاً-فضائل الایام والشہور، ص26تا33ملتقطاً)

❀ इतवार के दिन खेत बोना, दरख़्त लगाना और मकान की तामीर करना बाइसे बरकत है। (فضائل الایام والشہور، ص25)

इतवार का दिन कैसे गुज़ारें ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! फ़ी ज़माना कई ममालिक और बड़े शहरों में इतवार के दिन अक्सरिय्यत की छुट्टी होती है जिस की वज्ह से रात देर से सोने और इतवार की सुब्ह ताख़ीर से उठने का रवाज है जिस की वज्ह से एक तादाद नमाज़े फ़ज्र से महरूम रहती है। कुछ ऐसे भी हैं जो बिला वज्ह गली महल्ले या घर में सारी सारी रात जाग कर फ़ुज़ूल बातों में वक़्त बरबाद करते हैं और कुछ लोग त़रह त़रह के गुनाहों में मश्ग़ूल रहते हैं। अगर उस दिन को हम अल्लाह पाक की इ़बादत, क़ुरआने पाक की तिलावत और ज़िक्रो दुरूद की कसरत में बसर करें तो उस की बरकत से हमारे नामए आमाल में नेकियों का ज़ख़ीरा होगा। उस छुट्टी से फ़ाइदा उठाने के लिये जल्दी उठ कर नमाज़े तहज्जुद अदा कीजिये और फिर मस्जिद की पहली सफ़ में नमाज़े फ़ज्र बा जमाअ़त अदा कीजिये और नमाज़े इशराक़ व चाश्त अदा करने के लिये सूरज निकलने तक ज़िक्रो दुरूद में मश्ग़ूल रहिये कि उस की बड़ी फ़ज़ीलत है, ह़दीसे पाक में है : जो फ़ज्र की नमाज़ जमाअ़त से पढ़े फिर बैठ कर ज़िक्रे ख़ुदा करता रहे, यहां तक कि आफ़ताब बुलन्द हो जाए फिर दो रकअ़तें पढ़े तो उसे पूरे ह़ज और उ़मरह का सवाब मिलेगा। (ترمذی،2/100،حدیث:586) उस दिन की अच्छी इब्तिदा के साथ फ़राइज़ो वाजिबात की अदाएगी के इ़लावा दिन भर नेकियों में मश्ग़ूल रहिये اِنْ شَآءَاللّٰہ उस की ढेरों बरकतें नसीब होंगी। उस दिन के बारे में अह़ादीसे मुबारका और बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِم के अक़्वाल की रौशनी में चन्द नवाफ़िल और वज़ाइफ़ पढ़िये और उन पर अ़मल की कोशिश कीजिये।

इतवार का रोज़ा

मुम्किन हो तो उस दिन का रोज़ा रखिये कि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हफ़्ते और इतवार का रोज़ा अक्सर रखा करते और फ़रमाते : येह दोनों (हफ़्ता और इतवार) मुश्रिकीन की ईद के दिन हैं और मैं चाहता हूं कि उन की मुख़ालफ़त करूं। (صحیح ابنِ خزیمہ، 3/318، حدیث:2167)

मश्हूर मुफ़स्सिर, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : हफ़्ते का दिन यहूद की ईद है और इतवार का दिन ईसाइयों की, उन में वोह ख़ूब खाते पीते हैं और ऐ़श करते हैं हम ने उन की मुख़ालफ़त में रोज़ा रखा। (मिरआतुल मनाजीह़, 3/194)

इतवार के दिन के आमाल

﴾1﴿ ह़ाजत रवाई के दो आमाल

❀ हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इतवार के दिन कसरते नमाज़ से अल्लाह पाक की वह़दानिय्यत बयान करो क्यूंकि अल्लाह पाक वाह़िद है, उस का कोई शरीक नहीं। पस जिस ने इतवार के दिन नमाज़े ज़ोहर के फ़र्ज़ और सुन्नतों के बाद चार रकअ़त नमाज़ पढ़ी, पहली रकअ़त में सूरए फ़ातिह़ा और तन्ज़ीलुस्सजदह (सूरए सज्दा) पढ़ी, दूसरी में सूरए फ़ातिह़ा और सूरए मुल्क पढ़ी फिर तशह्हुद पढ़ कर सलाम फेरा फिर आख़िरी दो रकअ़त पढ़ने के लिये खड़ा हो गया और उन में सूरए फ़ातिह़ा और सूरए जुमुआ़ की तिलावत की और अल्लाह पाक से अपनी ह़ाजत त़लब की तो अल्लाह पाक के ज़िम्मए करम पर है कि उस की ह़ाजत पूरी फ़मा दे। (احیاء العلوم، 1/266) ❀ जो ज़रूरत मन्द इतवार के दिन त़ुलूए आफ़ताब के वक़्त 10 बार सूरए काफ़िरून पढ़े उस का काम बन जाएगा।

(जन्नती ज़ेवर, स. 604)

अम्बियाए किराम के साथ जन्नत में दाख़िला

हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है : जो शख़्स इतवार की रात बीस रकअ़त नमाज़ पढ़े हर रकअ़त में सूरए फ़ातिहा के बाद पचास (50) बार सूरए इख़्लास (قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ) और एक एक बार मुअ़व्वज़तैन (सूरए फ़लक़ व नास) पढ़े फिर सौ (100) बार इस्तिग़फ़ार करे फिर अपने लिये और वालिदैन के लिये सौ (100) बार मग़्फ़िरत की दुआ मांगे, सौ (100) बार नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़े, अपनी ताक़त व क़ुव्वत से बराअत का इज़्हार करे और अल्लाह पाक की पनाह तलब करे फिर कहे : "اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ اٰدَمَ صَفْوَةُ اللّٰهِ وَفِطْرَتُهٗ وَ اِبْرَاهِيْمَ خَلِيْلُ اللّٰهِ وَمُوْسٰى كَلِيْمُ اللّٰهِ وَعِيْسٰى رُوْحُ اللّٰهِ وَمُحَمَّدًا حَبِيْبُ اللّٰهِ" यानी मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूं कि हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام सफ़ियुल्लाह हैं और अल्लाह पाक ने उन्हें अपने दस्ते क़ुदरत से बनाया है। हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ख़लीलुल्लाह, हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام कलीमुल्लाह, हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام रूहुल्लाह और हज़रत मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हबीबुल्लाह हैं। तो उस के लिये अल्लाह पाक से औलाद की दुआ मांगने वालों की तादाद के बराबर सवाब है। बरोज़े क़ियामत अल्लाह पाक उसे अम्न वालों के साथ उठाएगा और अल्लाह पाक के ज़िम्मए करम पर है कि उसे अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के साथ जन्नत में दाख़िल फ़रमाए।

(مفتاح السعادة، ص727)

पीर शरीफ़

❀ पीर शरीफ़ के दिन की अ़ज़मत और बरकत जानने के लिये इस की चन्द तारीख़ी निस्बतें और ख़ुसूसिय्यात मुलाहज़ा कीजिये : ❀ हज़रते इदरीस عَلَيْهِ السَّلَام को पीर शरीफ़ के दिन आस्मान की तरफ़ उठाया गया और आप जन्नत में दाख़िल

हुए। ❀ ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام पीर शरीफ़ के रोज़ कोहे त़ूर पर तशरीफ़ ले गए। ❀ पीर शरीफ़ के दिन ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام हु़ज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास पहली मरतबा ह़ाज़िर हुए। ❀ उम्मत के आमाल भी पीर शरीफ़ के दिन ही हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में पेश किये जाते हैं। (کتاب السبعیات فی مواعظ البریات، ص42ملتقطاً- فضائل الایام والشھور، ص47) ❀ पीर शरीफ़ को रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते अक़्दस और आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक दौर से ख़ुसूसी बरकतें मिली हैं मसलन ﴾1﴿ हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआ़दत पीर शरीफ़ के दिन हुई और पीर शरीफ़ के दिन ही आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत का ज़ुहूर हुवा ﴾2﴿ पीर शरीफ़ के रोज़ मक्कए मुकर्रमा से हिजरत फ़रमाई ﴾3﴿ पीर शरीफ़ के दिन मदीनए मुनव्वरा में दाख़िल हुए ﴾4﴿ पीर शरीफ़ के दिन दारे फ़ानी से दारे बक़ा की त़रफ़ रेह़लत फ़रमाई ﴾5﴿ आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़जरे अस्वद को पीर शरीफ़ के दिन ही नसब फ़रमाया। (مسند احمد، 1/594، حدیث:2506 بتقدم وتاخر)

❀ एक रिवायत के मुत़ाबिक़ बद्र में फ़त्ह भी पीर शरीफ़ के दिन मिली और पीर शरीफ़ के दिन ही सूरए माइदा नाज़िल हुई। (معجم کبیر، 12/183، حدیث:12984 ملخصاً)

पीर शरीफ़ का दिन कैसे गुज़ारें ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! पीर शरीफ़ को हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से निस्बत की वज्ह से बहुत शरफ़ ह़ासिल है लिहाज़ा इस दिन को यूं गुज़ारिये :

पीर शरीफ़ का रोज़ा

मुम्किन हो तो पीर शरीफ़ का रोज़ा रख लीजिये कि पीर शरीफ़ का रोज़ा रखना सुन्नत है जैसा कि ह़ज़रते अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में पीर के रोज़े के बारे में दरयाफ़्त किया गया तो इरशाद फ़रमाया : इसी दिन मेरी विलादत हुई और इसी रोज़ मुझ पर वह़ी नाज़िल हुई। (مسلم، ص455، حدیث:2750)

पीर के दिन के आमाल

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! पीर शरीफ़ के दिन से मुतअ़ल्लिक़ चन्द आमाल पेश किये जा रहे हैं :

तमाम गुनाह मुआ़फ़

❀ ह़दीसे पाक में है : जो शख़्स बरोज़ पीर सूरज बुलन्द होते वक़्त दो रकअ़तें अदा करे हर रकअ़त में एक बार सूरए फ़ातिह़ा, एक बार आयतुल कुर्सी, एक बार सूरए इख़्लास (قُلْ هُوَاللّٰهُ اَحَد) और एक एक बार मुअ़व्वज़तैन (सूरए फ़लक़ व नास) पढ़े, फिर सलाम फेर कर दस बार इस्तिग़फ़ार करे और दस बार मुझ पर दुरूदे पाक पढ़े तो अल्लाह पाक उस के तमाम गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा देगा। (احیاء العلوم، 1/266)

❀ जो पीर की रात चार रकअ़त नमाज़ पढ़े, पहली रकअ़त में एक बार सूरए फ़ातिह़ा और 10 बार قُلْ هُوَاللّٰهُ اَحَد पढ़े, दूसरी रकअ़त में एक बार सूरए फ़ातिह़ा और 20 बार قُلْ هُوَاللّٰهُ اَحَد पढ़े, तीसरी रकअ़त में एक बार सूरए फ़ातिह़ा और 30 बार قُلْ هُوَاللّٰهُ اَحَد पढ़े, चौथी रकअ़त में एक बार सूरए फ़ातिह़ा और 40 बार قُلْ هُوَاللّٰهُ اَحَد पढ़े फिर सलाम फेर कर 75 बार قُلْ هُوَاللّٰهُ اَحَد पढ़े, फिर अपने और अपने वालिदैन के लिये 75 बार इस्तिग़फ़ार करे फिर अल्लाह पाक से अपनी ह़ाजत त़लब करे तो अल्लाह पाक के ज़िम्मए करम पर है कि उस की ह़ाजत पूरी फ़रमा दे। (احیاء العلوم، 1/268) ❀ जो शख़्स दो रकअ़त नमाज़ पढ़े, हर रकअ़त में 15 बार सूरए फ़ातिह़ा, 15 बार قُلْ هُوَاللّٰهُ اَحَد और 15, 15 बार मुअ़व्वज़तैन (यानी सूरए फ़लक़ व नास) पढ़े और सलाम फेरने के बाद 15 बार आयतुल कुर्सी पढ़े और 15 बार अल्लाह पाक से इस्तिग़फ़ार करे तो उस के लिये अ़ज़ीम सवाब और बड़ा अज्र है।

(اتحاف السادۃ المتقین، 3/630)

मंगल

मंगल भी मुबारक दिन है, इस दिन को तारीख़ी एतिबार से कई निस्बतें हासिल हैं मसलन ❀ इसी दिन अल्लाह पाक ने अपने बरगुज़ीदा नबी ह़ज़रते अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام को शिफ़ा अ़ता फ़रमाई। (مستدرک،5/298، حدیث:7556ملخصاً) ❀ इसी दिन अल्लाह पाक ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बैतुल मुक़द्दस से काबए मुशर्रफ़ा की त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ने का हुक्म इरशाद फ़रमाया। (صحیح ابن حبان،3/108، حدیث:1713) इसी दिन सूरतुल ह़दीद नाज़िल हुई और इसी दिन अल्लाह पाक ने लोहे को पैदा फ़रमाया। (مجمع الزوائد،5/154، حدیث:8331) ❀ इसी दिन अल्लाह पाक ने पहाड़ों और उन में मौजूद फ़ाइदा पहुंचाने वाली चीज़ों को पैदा फ़रमाया। (مستدرک،3/409، حدیث:4050) इसी दिन अल्लाह पाक ने जहन्नम को पैदा किया और इसी दिन अल्लाह पाक ने मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام को औलादे आदम की रूहों पर मुक़र्रर फ़रमाया।

(فیض القدیر،1/63، تحت الحدیث:8)

मंगल का दिन कैसे गुज़ारें ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मंगल के बारे में आप जान ही चुके हैं, इस मुबारक दिन को गुज़ारने की तफ़्सील येह है :

मंगल का रोज़ा

ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक महीने में हफ़्ता, इतवार और पीर का जब कि दूसरे माह मंगल, बुध और जुमेरात का रोज़ा रखा करते।

(ترمذی،2/186، حدیث:746)

मंगल के दिन कपड़ा न काटें

मंगल के रोज़ नया कपड़ा काटने से बचना चाहिये। शैख़ अ़ब्दुल ह़क़

मुहद्दिस देहल्वी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ हज़रते अलिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का क़ौल लिखते हुए फ़रमाते हैं कि जो मंगल के दिन कपड़ा काटे तो वोह कपड़ा चोरी हो जाएगा या पानी में डूब जाएगा या उसे आग जला देगी। (کشف الالتباس، ص54)

नोट : जब कोई शख़्स नया लिबास पहने तो दस बार सूरत "اِنَّآ اَنْزَلْنٰہُ" पढ़ कर पानी पर दम करे और उस पानी के छींटे लिबास पर मारे कि बरकत होगी।

(کشف الالتباس، ص54)

बुध

बुध का दिन भी कई इम्तियाज़ी ख़ुसूसिय्यात रखता है और इस दिन को भी तारीख़ी एतिबार से कई निस्बतें हासिल हैं मसलन ❀ बुध के दिन अल्लाह पाक ने सात काफ़िरों को सात चीज़ों से हलाक किया : ﴾1﴿ औज बिन उनुक़ जिस की उम्र चार हज़ार पांच सौ (4500) साल और क़द सब से बड़ा था, को हुद हुद परिन्दे के ज़रीए ﴾2﴿ क़ारून को ख़स्फ़ (ज़मीन में धंसाने) के ज़रीए ﴾3﴿ फ़िरऔन और उस के लश्कर को दरिया के ज़रीए ﴾4﴿ नमरूद मलऊन को मच्छर के ज़रीए ﴾5﴿ क़ौमे लूत को संगरेज़ों के ज़रीए ﴾6﴿ शद्दाद बिन आद को हज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام की आवाज़ से और ﴾7﴿ क़ौमे आद को तेज़ हवा के ज़रीए।

(کتاب السبعیات فی مواعظ البریات، ص71- فضائل الایام والشہور، ص117)

❀ हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि जिस ने बुध या हफ़्ते के दिन हिजामा कराया फिर वोह अपने जिस्म में बरस देखे तो वोह अपने आप को ही मलामत करे। (جامع صغیر، ص508، حدیث:8328)

हज़रते अल्लामा अब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ (वफ़ात : 1031 हि.) फ़रमाते हैं : इमाम अबू जाफ़र नीशापूरी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया : मैं ने एक दिन कहा कि येह हदीस ग़ैरे सहीह है और बुध वाले दिन हिजामा करवाया तो मुझे बरस (की

बीमारी) हो गई। फिर मैं ख़्वाब में रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुवा तो मैं ने आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से उस मरज़ की शिकायत की तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम मेरी ह़दीस की इहानत से बचो (यानी तुम ने मेरी ह़दीस की मुख़ालफ़त की इसी लिये इस मरज़ में मुब्तला हुए)। (فیض القدیر، 6/45، تحت الحدیث:8328)
बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم तदरीस की मजलिस का इनइ़क़ाद बुध के रोज़ फ़रमाते हैं, क्यूंकि इ़ल्म नूर है तो उस की इब्तिदा नूर के दिन ही मुनासिब है।

(فضائل الایام والشہور، ص115)

बुध का दिन कैसे गुज़ारें ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बुध की निस्बतों और इम्तियाज़ी ख़ुसूसिय्यात को जानने के बाद उस दिन में किये जाने वाले चन्द मुन्तख़ब आमाल की तफ़्सील पढ़िये :

बुध का रोज़ा

ह़ज़रते मुस्लिम क़ुरशी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ रिवायत करते हैं कि मैं ने हु़ज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सारी ज़िन्दगी के रोज़े रखने के बारे में सुवाल किया तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम्हारे अहले ख़ाना का भी तुम पर ह़क़ है, रमज़ान के रोज़े रखो और उस के बाद वाले महीने के रोज़े और हर बुध और जुमेरात के रोज़े रखा करो तो गोया तुम ने सारी ज़िन्दगी रोज़े भी रखे और इफ़्तार भी किया। (ترمذی، 2/187، حدیث:748)

बुध के दिन के आमाल

﴾1﴿ क़ियामत तक सवाब

जो शख़्स बुध की रात दो रकअ़त नमाज़ पढ़े, पहली रकअ़त में सूरए फ़ातिह़ा के बाद दस बार सूरए फ़लक़ (قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ) पढ़े, दूसरी में सूरए फ़ातिह़ा के बाद दस बार सूरए नास (قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ) पढ़े तो हर आस्मान से सत्तर हज़ार

फ़रिश्ते नाज़िल होंगे जो क़ियामत तक उस का सवाब लिखते रहेंगे।

(مفتاح السعادۃ، ص728)

﴾1﴿ बुध को नाख़ुन काटने का मसअला

बुध के दिन नाख़ुन नहीं काटने चाहियें कि बरस यानी कोढ़ हो जाने का अन्देशा है अलबत्ता अगर उन्तालीस (39) दिन से नहीं काटे थे, आज बुध को चालीसवां दिन है अगर आज नहीं काटता तो चालीस दिन से ज़ाइद हो जाएंगे तो उस पर वाजिब होगा कि आज ही के दिन काटे इस लिये कि चालीस दिन से ज़ाइद नाख़ुन रखना नाजाइज़ व मकरूहे तह़रीमी है। (तफ़्सीली मालूमात के लिये फ़तावा रज़विय्या, जिल्द 22, सफ़ह़ा 574, 685, मुलाह़ज़ा फ़रमा लीजिये) (बुढ्ढा पुजारी, स. 32)

आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से इस त़रह़ का सुवाल किया गया कि एक ह़दीस में बुध के दिन नाख़ुन काटने की मुमानअ़त आई और दूसरी ह़दीस में बुध के दिन नाख़ुन काटने की फ़ज़ीलत आई, इन दोनों रिवायतों में तत़बीक़ या तरजीह़ की क्या सूरत है और बुध के दिन नाख़ुन तराशना कैसा होगा? इस के जवाब में आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : “नाख़ुन काटने से मुतअ़ल्लिक़ किसी दिन कोई मुमानअ़त नहीं, इस लिये कि दिन की तायीन में कोई ह़दीसे सह़ीह़ साबित नहीं, अलबत्ता बाज़ ज़ईफ़ ह़दीसों में बुध के दिन नाख़ुन काटने की मुमानअ़त हैं, लिहाज़ा अगर बुध का दिन वुजूब का दिन आ जाए मसलन उन्तालीस दिन से नहीं तराशे थे, आज बुध को चालीसवां दिन है, अगर आज नहीं तराशता तो चालीस दिन से ज़ाइद हो जाएंगे तो उस पर वाजिब होगा कि बुध के दिन तराशे, इस लिये कि चालीस दिन से ज़ाइद नाख़ुन रखना नाजाइज़ व मकरूहे तह़रीमी है और अगर मज़कूरा सूरत न हो तो बुध के इ़लावा किसी और दिन तराशना मुनासिब कि जानिबे मना को तरजीह़ रहती है।”

(फ़तावा रज़विय्या, 22/685 मुलख़्ख़सन)

नया काम बुध के दिन शुरूअ़ किया जाए

कोई नया काम शुरूअ़ करना हो तो उस के लिये भी बुध का दिन बहुत ही बाबरकत है। ह़दीसे पाक में है : مَا بُدِئَ بِشَیْءٍ یَوْمَ الْاَرْبَعَاءِ اِلَّا تَمَّ यानी कोई ऐसा अ़मल नहीं जिस की इब्तिदा बुध से हुई हो और वोह मुकम्मल न हुवा हो। (کشف الخفاء، 2/163، تحت الحدیث:2189) उम्मत के जलीलुल क़द्र उ़लमा दर्सो तदरीस के मुआ़मले में भी इस ह़दीसे पाक पर अ़मल किया करते थे। जैसा कि ह़ज़रते शैख़ बुरहानुद्दीन ज़रनोजी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हमारे उस्ताद शैख़ुल इस्लाम बुरहानुद्दीन (साहि़बे हिदाया) رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की आ़दत थी कि आप सबक़ बुध ही के रोज़ शुरूअ़ फ़रमाया करते थे और इस बात पर एक ह़दीस रिवायत कर के उस पर इस्तिदलाल करते हुए फ़रमाते थे कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : कोई ऐसा अ़मल नहीं जिस की इब्तिदा बुध से हुई हो और वोह मुकम्मल न हुवा हो। सबक़ शुरूअ़ करने का येही त़र्ज़े अ़मल इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ का था और आप इस ह़दीस को अपने उस्ताद शैख़ क़वामुद्दीन अह़मद बिन अ़ब्दुर्रशीद رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से रिवायत करते हैं और मैं ने चन्द बा एतिमाद लोगों से सुना है कि शैख़ अबू यूसुफ़ हमदानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ हर नेक काम को बुध के दिन पर रखते थे। बुध को कुछ ख़ुसूसिय्यत यूं भी हासिल है कि बुध वोह दिन है जिस में अल्लाह पाक ने नूर को पैदा फ़रमाया और यूं येह दिन कुफ़्फ़ार के ह़क़ में मन्हूस और मोमिनीन के ह़क़ में मुबारक साबित होता है। (تعلیم المتعلم، ص72-73)

क़बूलिय्यते दुआ़ की नवेद

ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पीर, मंगल और बुध तीन दिन दुआ़ फ़रमाई, बुध के दिन दो नमाज़ों ज़ोहर और अ़स्र के दरमियान दुआ़ए मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को क़बूलिय्यत का सहरा अ़ता हुवा और चेहरए अन्वर पर ख़ुशी के आसार नुमूदार हुए। ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते

हैं : फिर मुझे जब भी कोई अहम और तक्लीफ़ देह मुआमला पेश आया मैं ने इसी वक़्त का इन्तिज़ार किया और उस वक़्त बारगाहे इलाही में दुआ की तो मैं ने क़बूलिय्यत देखी। (شعب الایمان، 3/397، حدیث:3874)

जुमेरात

जुमेरात का दिन बहुत ही बाबरकत है क्यूंकि इस में बरकत के लिये ख़ुद नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुसूसी दुआ करते हुए इरशाद फ़रमाया : اَللّٰھُمَّ بَارِكْ لِاُمَّتِیْ فِیْ بُكُوْرِھَا یَوْمَ خَمِیْسِھَا यानी ऐ अल्लाह ! मेरी उम्मत की जुमेरात की सुब्ह में बरकत दे। (مسند بزار، 11/448، حدیث:5312)

इस दिन को तारीख़ी एतिबार से कई निस्बतें हासिल हैं मसलन ❀ हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام जुमेरात को शाहे मिस्र के पास तशरीफ़ ले गए और वहां हज़रते बीबी हाजिरा رَضِیَ اللہُ عَنْھَا को पाया। ❀ जुमेरात के दिन हज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام के भाई आप عَلَیْہِ السَّلَام के दरबार में हाज़िर हुए और नेमत पाई। ❀ हज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام के सगे भाई बिन्यामीन मिस्र में दाख़िल हुए तो हज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام को पाया। ❀ हज़रते याक़ूब عَلَیْہِ السَّلَام मिस्र में दाख़िल हुए तो अम्न को पा लिया। ❀ इमामुल अम्बिया हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल हुए तो फ़त्हो नुसरत को पाया। (کتاب السبعیات فی مواعظ البریات، ص84 ملتقطاً۔ فضائل الایام والشہور، ص142-144 بتغیر)

❀ हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जुमेरात के दिन सफ़र को पसन्द फ़रमाया करते थे जैसा कि हज़रते कअ़ब बिन मालिक رَضِیَ اللہُ عَنْہُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ग़ज़्वे के लिये जुमेरात के दिन जाना पसन्द फ़रमाते थे। (بخاری، 2/296، حدیث:2950)

अ़ल्लामा मुहम्मद अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ (वफ़ात : 1031 हि.) लिखते हैं : जुमेरात का दिन बड़ा मुबारक दिन है ख़ास कर तलबे हाजत और इब्तिदाए सफ़र के लिये। हज़रते सअ़्द رَضِیَ اللہُ عَنْہُ जुमेरात को सफ़र पर जाते थे और

बड़े मालदार बन गए। (فیض القدیر،2/133،تحت الحدیث:1458) मज़ीद फ़रमाते हैं : इ़ल्म ह़ासिल करने के लिये सुब्ह़ सवेरे बैठना मुस्तह़ब है और इ़ल्म का शुरूअ़ करना यानी किसी दीनी किताब की इब्तिदा जुमेरात के रोज़ ख़ुसूसन सुब्ह़ सवेरे बहुत बेहतर है। अगर्चे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم ने इ़ल्म की इब्तिदा बरोज़े बुध फ़रमाई है क्यूंकि बुध यौमे नूर है और इ़ल्म भी नूर है ताहम जुमेरात के दिन इ़ल्म को शुरूअ़ करना बाइ़से बरकत है। बाज़ जामेए़ इ़ल्म व विलायत वसिय्यत फ़रमाते हैं कि तालीफ़ व क़िराअत की इब्तिदा बरोज़ पीर और जुमेरात होनी चाहिये।

(فیض القدیر،2/23،تحت الحدیث:1214ملتقطاً-فضائل الایام والشہور،ص141)

जुमेरात का दिन कैसे गुज़ारें ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जुमेरात के बारे में आप जान ही चुके हैं, इस मुबारक दिन की मुबारक घड़ियों को इ़बादत में गुज़ारने के लिये तफ़्सील येह है :

जुमेरात का रोज़ा

मुम्किन हो तो इस दिन का रोज़ा रख लीजिये कि येह हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत है, चुनान्चे ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! जब आप रोज़े रखते हैं तो ऐसा लगता है कि आप इफ़्तार न करेंगे (यानी मुसल्सल रोज़े रखेंगे) और जब आप रोज़े नहीं रखते हैं तो ऐसा लगता है कि सिवाए 2 दिन के कभी रोज़े न रखेंगे और दो दिन ऐसे हैं कि अगर आप के रोज़ों के दरमियान में आ जाएं तो ठीक वरना आप बिलख़ुसूस इन दिनों का रोज़ा ज़रूर रखते हैं। दरयाफ़्त फ़रमाया : वोह कौन से दिन हैं ? मैं ने अ़र्ज़ की : पीर और जुमेरात। फ़रमाया : येह वोह दिन हैं जिन में रब्बुल आ़लमीन की बारगाह में आमाल पेश किये जाते हैं लिहाज़ा मैं पसन्द करता हूं कि मेरे आमाल रोज़े की ह़ालत में पेश किये जाएं। (نسائی،ص387،حدیث:2355)

दुरूदे पाक की कसरत कीजिये

उस दिन की मज़ीद बरकतें पाने के लिये नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में कसरत से दुरूदो सलाम के गजरे पेश कीजिये कि ह़दीसे पाक में है : जब जुमेरात का दिन आता है अल्लाह पाक फ़रिश्तों को भेजता है जिन के पास चांदी के काग़ज़ और सोने के क़लम होते हैं वोह लिखते हैं कि कौन यौमे जुमेरात और शबे जुमुआ मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ता है। (کنزالعمال،جز:1،1/250،حدیث:2174)

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़्ह़ा	उ़न्वान	सफ़्ह़ा
जुमुअ़तुल मुबारक का दिन कैसे गुज़ारें ?	03	पीर शरीफ़ का रोज़ा	15
सिर्फ़ जुमुआ का रोज़ा रखना कैसा ?	03	पीर के दिन के आमाल	16
दस हज़ार बरस के रोज़ों का सवाब	04	तमाम गुनाह मुआफ़	16
जुमुआ के दिन के आमाल	04	मंगल के दिन कपड़ा न काटें	17
शबे जुमुआ के 4 आमाल	04	बुध का रोज़ा	19
नमाज़े जुमुआ के बाद येह दुआ पढ़िये	07	क़ियामत तक सवाब	19
हफ़्ते का दिन कैसे गुज़ारें	10	बुध को नाख़ुन काटने का मसअला	20
हफ़्ते की बा बरकत सुब्ह़	11	नया काम बुध के दिन शुरूअ किया जाए	21
इतवार का दिन कैसे गुज़ारें ?	12	क़बूलिय्यते दुआ की नवेद	21
इतवार का रोज़ा	13	जुमेरात का दिन कैसे गुज़ारें ?	23
ह़ाजत रवाई के दो आमाल	13	जुमेरात का रोज़ा	23
पीर शरीफ़ का दिन कैसे गुज़ारें ?	15	दुरूदे पाक की कसरत कीजिये	24

अगले हफ़्ते का रिसाला

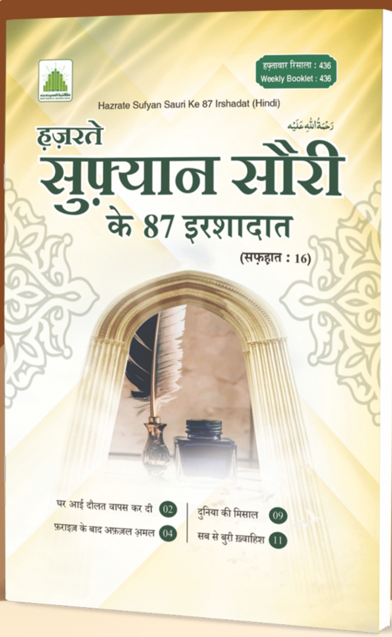

DAWATEISLAMI INDIA — FGN Channel Dekhte Rahiye — MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025